# ❋ उपसंहार ❋

## उपसंहार

हिंदी उपन्यास का विकास उन्नसवी सदी के उत्तरार्ध में गतिशील हुआ है। बीसवी सदी के पूर्वार्ध में प्रेमचंद ने उसे विश्वसाहित्य की श्रेणी में ला बिठाया। आगे यशपाल, रांगेय राघव जैसे उपन्यासकार प्रेमचंद के उत्तराधिकारी के रूप में उपन्यास साहित्य के प्रांगण में अवतीर्ण हुए। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड़ में "प्रगति" की जगह "प्रयोग" ने बल पकड़ा। ऐसे प्रयोगशील उपन्यासकारों में उल्लेखनिय हैं - कमलेश्वर, उषा, प्रियंवदा, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, राजेंद्र यादव, नागार्जुन आदि। इन उपन्यासकारों में कमलेश्वर का अपना अलग स्थान है। 'एक सड़क सत्तावन गलियां', 'डाक बंगला', 'लौटे हुए मुसाफिर', 'तीसरा आदमी', 'वही बात', 'आगामी अतीत', 'कॉली आंधी', 'सुबह . . . दोपहर . . शाम', 'रेगिस्तान' और 'कितने पाकिस्तान' आदि उपन्यासों का सृजन कमलेश्वर ने किया हैं।

कमलेश्वर के जीवन का सामान्य, परिचय तीन खंड़ों में विभाजित है। जिनमें कमलेश्वर की जीवन रेखा, उनके व्यक्तित्व के विभिन्न तथा कृतित्व पर प्रकाश डालने के बाद निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार -

कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक तथा आलोचक कमलेश्वर का जीवन, अंधेरे से रोशनीं की यात्रा है। उनका प्रारंभिक जीवन यातनाओं से भरा हुआ नजर आता है। बचपन में ही उनके पिता की मृत्यु गई थी । उन्हें बड़े भाई और माँ का सहारा मिलता है। आर्थिक अभाव के कारण उनके घर की हालत बूरी हो जाती है। प्राथमिक शिक्षा पढ़ते समय उन्हें बहुत बेइमान किया जाता था। कमलेश्वर के बचपन में ही बड़े भाई सिद्धार्थ की मृत्यु हुई थी और उनका एकमात्र सहारा भी चला गया था। कमलेश्वर को अत्यंत गरीबी में रहना पड़ा। इसी कारण उन्हें छोटी उम्र में भी बड़ों की तरह निर्णय लेने पड़ते थे। दु:ख में ही खुश रहना पड़ता था। माँ के वैष्णवी संस्कारों ने उन्हें बागी होने से बचाया था। कालेज की पढ़ाई करते समय वे कहीं छोटी-मोटी नौकरी करते थे। बचपन से ही उनका साहित्य से लगाव था। उनमें नया सबकुछ सीखने की बड़ी गहरी ललक थी। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए कमलेश्वर ने मुसीबतों को झेला है। कठिन समय

में भी उन्होंने अपना लेखन कार्य जारी रखा। उनका विवाह सन् 1958 में गायत्री नामक युवती से हुआ। पत्नी गायत्री एक संस्कारक्षम और शालीन नारी होने के साथ-साथ एक लेखिका भी है।

कमलेश्वर एक प्रतिभा संपन्न व्यक्ति है। वे बचपन से ही जिद्दी और स्वाभिमानी रहे हैं। वे एक नहीं बल्कि अनेक काम एक साथ करते हैं। मित्रों से वे बहुत प्यार करते हैं और उनके सुख-दु:ख में शामिल होते हैं। आजादी के समय उन्होंने क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी में हिस्सा लेकर देश में जन-जागृति का कार्य किया था। कमलेश्वर की मूल प्रवृत्ति वैसे ही कथाकार की है। कमलेश्वर नई पीढ़ी के उपन्यासकारों में अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं। कस्बाई जीवन, शहरी तथा महानगरीय जीवन तथा आधुनिक समाज जीवन ही कमलेश्वर की अभिव्यक्ति के प्राण है। कस्बाई समाज जीवन कमलेश्वर की भोगी हुई जिंदगी है, जिसका प्रमाण "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" उनका पहला उपन्यास है। इसके बाद वे शहर तथा महानगर से जुड़ जाले हैं। इसका प्रभाव भी उनके आगे के उपन्यासों पर परिलक्षित होता है। उनके उपन्यासों की कथाभूमि कस्बों से लेकर बड़े शहर के विभिन्न क्षेत्रों तक फैली हुई है। कस्बे में जन्में कमलेश्वर ने सदैव अपने युग की हर समस्या के मानवीय पक्ष को रचना का आधार बनया है। कमलेश्वर की जवीन यात्रा कस्बा मैनपुरी से शुरू हुई और इलाहाबाद, बंबई से होकर अब दिल्ली में टीकी हुई है।

वास्तव में सन् 1971 में कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' नामक कहानी लिखी थी। जिसका कथानक लेखक (जिसे उपन्यास में 'अदीब' कहा गया है ) और विद्या के मिलने, बिछुड़ने और अंततः अलग होना ऐसा था। तब से कमलेश्वर के मन की जिरह प्रारंभ हुई थी।

कमलेश्वर का कहना है कि भले ही सन् 1947 में पाकिस्तान अस्तित्व में आया हो लेकिन अतीत में कितने पाकिस्तान बने और उन पाकिस्तानों के बीच से भी पाकिस्तान न बन रहे हैं। सहस्त्रों वर्षों से ही यही होता आ रहा है और पाकिस्तानों की कथा दोहरायी जा रही है। 'पाकिस्तान' यह अलगाववादी भावना का प्रतीक है। कथावस्तु

से गुजरते हुए उपन्यासकार हमारे समक्ष उस सत्य को उद्‌घाटित करते हुए विचारणीय प्रश्न खड़ा कर देता है कि कब तक ऐसे पाकिस्तान न बनते रहेंगे ? इस प्रश्न का उत्तर स्वंय कमलेश्वर भी नहीं दे सकते।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का कथा क्षेत्र भारत से लेकर जपान, चीन, तुर्की, इरान, युगोसहावियाँ, स्पेन . . . अर्थात जहाँ-जहाँ सभ्यताओं का हरण-क्षरण किया गया उनमें समाहित हैं। साथ ही अदीब सिंधु, युनानी, बेबोलोनिया, मेसोपोटामियन, सुमेरी-अक्कादी आदि सभ्यताओं की व्याख्या प्राप्त मिथकों के आधार पर करता है। उपन्यास का मूल है मनुष्यता। कमलेश्वर ने मनुष्यता के विनाश को भारतीय परिप्रेक्ष में ही नहीं विश्व के परिप्रेक्ष में तलाशने का प्रयास अदीब द्‌वारा किया गया है। उपन्यास 'झूठा -सच' और 'तमस' की भाँति कमलेश्वर ने विभाजन की त्रासदीपूर्ण घटनाओं को उद्‌घाटित करने के बजाय उस बिंदू को तलाश ने का प्रयास किया है। जो ऐसे विभाजन का कारण बनते हैं और यही कारण ढूढ़ने के लिए अदीब अतीत में भटकता है, इतिहास के पन्ने पलटता हुआ नजर आता है।

उपन्यास का सुत्रधार है अदीब अर्थात लेखक। उसका एक में तीन सहायक स्टेनो और अर्दली है महमूद। समय की नब्ज पर उंगली रखनें अतीत के झरोखों में झाँकने, तथा वर्तमान, भूत-भविष्य की यात्रा वे करते हैं। प्राकृतिक -अप्राकृतिक कारणों से समय से पहले मरे हुई लोगों की दस्तके सुनने के लिए उन्होंने एक अदालत बनायी है जिसका कोई निश्चित समय और स्थान नहीं है। उपन्यास में प्रागैतिहासिक काल से लेकर कारगिल युद्‌ध तक का चित्रण किया है। अर्थात कमलेश्वर ने इतिहास पुराण तथा विभाजन के दौर पर प्रकाश डाला है। कमलेश्वर ने समय को ही नायक खलनायक बना दिया है। उन्होने लिखा है कि "एक तो यह कि कोई नायक या महानायक सामने नहीं था, इसीलिए मुझे समय को ही नायक-महानायक और खलनायक बनाना पड़ा।"

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कथोपकथन या संवाद तत्व का इस्तमाल उपन्यास में प्रवाहमयता लाने में सफल हुआ है। छोटे-छोटे संवादों के कारण उपन्यास में रोचकता आ गयी है। पर कहीं-कहीं बड़े -बड़े संवाद आये हैं। जिससे कथानक का

प्रवाह टूटता हुआ नजर आता है। उपन्यासातंर्गत उत्तराधिकार युद्ध और दारा शिकोह को लेकर आये हुए संवाद बहुत बड़े हैं।

देशकाल वातावरण के सहारे कमलेश्वर ने उपन्यास में प्राकृतिक पृष्ठभूमि और काल विशेष का विश्लेषण किया है। उपन्यास में सतयुग से लेकर कलियुग तक का वर्णन किया है। ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण करते हुए कमलेश्वर ने जहाँगीर के दरबार जहाँगीर कालीन रस्मों -रिवाज, साथ ही बाबर तथा उसका कालखंड, धर्मांध औरंगजेब और समाज की दशा और आदिपर विस्तार से चर्चा की है। 'कितने पाकिस्तान' में उत्तराधिकर के सामूगढ़ के निर्णायक युद्ध का वर्णन गंगा,यमुना, चम्बल आदि नदियाँ करती है। अर्थात कमलेश्वर ने प्राकृतिक को मानव कार्यो में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले पात्रों के रूप में चित्रित किया है और उनके सहारे ऐतिहासिक पात्रों पर प्रकाश डाला है। जिससे उपन्यास में रोचकता और सजीवता आ गयी है।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने प्रतीकात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, पूर्व-दीप्ति शैली, पत्रात्मक, डायरी और आत्मकथात्मक शैलियों का प्रयोग किया है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का शीर्षक ही प्रतीकात्मक रूप में लिया है।

विश्लेषणात्मक शैली में कमलेश्वर ने सन् 1947 में भारत -पाकिस्तान विभाजन की घटना को पाठकों के सामने रखते हुए घटना के मूल तक जाने का प्रयास किया है। साथ में मंदिर-मस्जिद के झगड़े सत्रहवी सदी में धर्म के नाम पर खेला गया उत्तराधिकार युद्ध ब्रिटिशों का आगमन आदि घटनाओं का विश्लेषण किया है। पूर्व -दीप्ति शैली के अतंर्गत विद्या और अदीब की प्रेम कहानी को चित्रित किया है। पत्रात्मक शैली में कमलेश्वर ने ऐतिहासिक पत्र जो कि मिर्झाराजा जयसिंह ने जोधपुर के जसवंत सिंह को डराने धमकाने के लिए लिखा था उसका चित्रण किया है। साथ ही विद्या ने अदीब को लिखा हुआ रहस्यभरा पत्र उपन्यास में रोचकता, कुतहल निर्माण करता है। साथ ही कारगिल इलाके में हो रही पाकिस्तानी सैनिकों की घुसपैठ पर हमारे देश की कोई भी राजनीतिक पार्टी अपना बयान नहीं दे रही थी। इसीलिए अदीब ने हमारे प्रधानमंत्री और

रक्षामंत्री को पत्र लिखकर उनका लक्ष्य इस घटना की तरफ आकर्षित किया और उनके विचार जानने चाहे। डायरी शैली में बाबर का डायरीनुमा ' बाबरनामा' और गुलबंदन का 'हुमायुँनामा' इनका चित्रण किया है। आत्मकथात्मक शैली के अंतर्गत शहाजहाँ का कालखंड़ चित्रित किया है। साथ ही उत्तराधिकार युद्ध को चित्रित करते हुए दाराशिकोह का पराजय और पलायन इन घटनाओं का चित्रण किया है।

इस उपन्यास में कमलेश्वर ने ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डाला है। कमलेश्वर ने भारत-पाकिस्तान विभाजन की घटना ब्रिटिशों की स्वार्थी वृत्ति, धार्मिक उन्माद आदि घटनाओं का संबंध सत्रहवी सदी के उत्तराधिकार युद्ध से जोड़ा है। धर्मांध औरंगजेब द्वारा दारा की हत्या में ही पाकिस्तान निर्माण की नींव दिखाई देती है। साथ ही स्वार्थ से प्रेरित इकबाल, बॅ. जिन्ना इनके विचारों पर भी प्रकाश डाला है।

विभाजन के बाद होने वाली त्रासद स्थितियों की जानकारी होने के बावजूद भी काँग्रेसी नेत विभाजन को तैयार हुए। अत: नेताओं की मानसिक तथा शारीरिक स्थिति पर भी विचार विमर्श किया जा चुका है।

सबसे पहले कमलेश्वर ने आर्यों के आगमन पर विस्तार से चर्चा की है। अर्यों के कालखंड़ में ही वर्णव्यवस्था का प्रचलन हुआ। आर्यों की देन वेद, उपनिषध है। पर कुछ इतिहासकारों का मानना है कि आर्य आक्रमक थे। लेकिन निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं कि आर्य आक्रमक नहीं थे। वे शांतिप्रिय कबीलों के रूप में यहाँ आये थे। और वे आक्रमक होते तो वेदों का सृजन नहीं कर सकते थे। क्योंकि इतना उत्कृष्ठ साहित्य युद्धों के मध्य नहीं लिखा जा सकता।

'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में इतिहास आदयांत छाया हुआ है - प्रागैतिहासिक काल से लेकर कारगिल युद्ध तक। मतलब इतिहास यहाँ किसी ठोस कालखंड़ में बंधा किन्ही खास पात्रों घटनाओं और समस्याओं से घिरा पिरियड नहीं है। बल्कि वक्त के साथ बहता खंड़ों में विभक्त होते हुए भी अंखड़ चरित्र का आभास देता हैं। यहाँ तक कि अदीब की जिंदगी की स्मृतियाँ भी इतिहास के अंकुश से मुक्त नहीं है। अदीब की अदालत में अलग-अलग किरदारों में हजारों बरस बूढ़े इतिहास को पेश कर

अपने वक्त की संकरापन्नटा स्थितियों पर प्रकाश डाला है । जैसे कि अयोध्या के राम जन्मभूमि मंदिर को लेकर बाबर पर लगाए आरोप । मगर अदीब के सहारे कमलेश्वर ने सच्चाई का पक्ष प्रस्तुत करते हुए बाबर पर लगाएं गए आरोपों का खंड़न किया और बाबरी मस्जिद को खाली जगह पर इब्राहीम लोदी ने बनवायी थी इस सत्य को ढूँढ़ निकाला है । अर्थात कमलेश्वर ने स्वार्थलोलुप ब्रिटिश सत्ता तथा उनकी हिंदू-मुस्लिम विवाद को बनाऐ रखने की हवस पर प्रकाश डाला है ।

कमलेश्वर की खूबी यह है कि 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में ऐसे तमाम पात्रों को चित्रित किया है । जिनमें मनुष्य की जय-गाथा छिपी हुई है । वे पात्र नए और जीवंत किस्म के प्रतिकों में बदल दिए हैं । ऐसा ही एक प्रतीक है - दाराशिकोह । दाराशिकोह के बारे में अदीब की टिप्पणी महत्त्वपूर्ण है कि "बाबर और हुमायुँ के पश्चाताप और शोक का मूर्तिमान रूप था अकबर । जहाँगीर और शहाजहाँ के पश्चाताप का नतीजा था, दाराशिकोह। " दाराशिकोह की कहानी थरथरा देती है । और 'कितने पाकिस्तान' में पन्नों से निकलकर उसकी पीड़ा और चीत्कार हमारे दिलो को इस तरह मथने लगती है कि उपन्यास के इन पन्नों को पढ़ना भी एक भीषण यातना की तरह है । लेकिन 'कितने पाकिस्तान' के सबसे सार्थक और सबसे तेजस्वितापूर्ण पन्ने भी यही है । जिनमें दाराशिकोह और उसकी क़हानी है ।

दाराशिकोह हिंदू और मुसलमान की हदों से ऊपर उठकर एक अलग मनुष्य सभ्यता की नींव रखना चाहता है । किंतू उत्तराधिकार के युद्ध में धर्मांध औरंगजेब दाराशिकोह को परास्त कर देता है, पलायन के शिवाय दारा के सामने कोई और रास्ता नहीं था । दर-दर की ठोकरे खानेवाले दारा का साथ सगे-संबधि तथा मित्र भी नहीं देते । अंत में जब उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई और वह अकेला एवं परस्त हो गया तब उसे मलिक जीवन ने धोखा दिया । दारा को पकड़कर औरंगजेब के हवाले कर दिया और आगे उसका सिर काट दिया गया । उस दिन सूरज और इतिहास भी काला हो गया था । औरंगजेब ने शहाजहाँ को कैद कर लिया और वह सर्वशक्तिशाली बन गया । मगर दारा के कटे हुए सिर का अट्हास उसके महलों की दीवारों को पार करता हुआ उसके कानों में पड़ता तो वह बेचैन हो उठता ।

दारा का यह अट्हास 'कितने पाकिस्तान' के पन्नोंसे निकल कर बाहर आता है तो पाठक के हृदय को विदीर्ण करने लगता है। बार-बार एक ही सवाल रूप लेता है कि काश ऐसा न हुआ होता, तो हमारी क़हानी कुछ और होती। हमारा आज का इतिहास कुछ और ही होता। दारा की त्रासदी हमारे इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी है और इसे कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में इतने कमाल के साथ लिखा है कि हम चकित और स्तंभित हो जाते हैं। यह भी लगता है कि अगर यह उपन्यास सिर्फ 'दाराशिकोह' पर ही लिखा जाता है और बाकी सवाल इस कहानी के बीच से ही निकलते तो यह कहीं ज्यादातर अच्छा और कालजयी उपन्यास होता।

'कितने पाकि स्तान' का उत्स लेखक भारत-विभाजन से बहुत पूर्व तलाशने का प्रयास करता है। और वह है औरंगजेब द्वारा धर्म के नाम पर दाराशिकोह की हत्या। सर्वधर्मप्रिय, उदार और विद्वान दाराशिकोह धर्मांध, कट्टर और असहिष्णु, औरंगजेब द्वारा की गयी हत्या में लेखक को पाकिस्तान निर्माण की नींव दिखाई देती है। दाराशिकोह और औरंगजेब प्रकरण उपन्यास के शताधिक पृष्ठों से घेरे हुए हैं। इस प्रकरण के माध्यम से लेखक विषय से संबंधित अनेक बातों की पड़ताल करना है और निष्कर्ष रूप में यह सिद्ध कर देता है कि धार्मिक उन्माद मनुष्यता के लिए सदैव घातक रहा है। जैसे कि भारत-पाक विभाजन।

आर्यों के आगमन कालखंड से लेकर विभाजन की पूर्व स्थिति तक का इतिहास गवाह है कि हिंदुस्तान पर अनेक विदेशी शासकों ने आक्रमण किये किन्तु उन्होंने कभी भी देश का नहीं किया जैसा कि आर्यों के आगमन के बाद आर्यों ने इस देश को कभी भी सिंधु देश, सरस्वति देश या गंगा देश के रूप में विभाजित नहीं किया। उनके ग्रंथों में हमेशा इस प्राय:द्विप को जम्बूद्विप ही पुकारा गया। आगे रामायण काल में राक्षस रावण से युद्ध हुआ तो केवल आर्य नहीं, इस महादेश के एक - एक अंचल का व्यक्ति लड़ा। महाभारत के युद्ध के बाद विजयी पांडवों ने अपने विरूद्ध लड़ने वाले किसी भी पराजित महारथी के राज्य को इस देश से पृथक नहीं किया। ईसा पूर्व तीसरी सदी में मेसोपोटामिया का सिंकदर आया, महाराजा पुरू को पराजित कर लेने के बाद भी उसने इस देश को विभाजित नहीं किया। शक और हूण आक्रमणकारी थे, वे भी इस महादेश के उकडे नहीं

कर सके। मोहम्मद-बिन-कासिम आया तो उसने इसी महादेश के सिंध क्षेत्र पर राज्य किया। उसने भी इस देश को नहीं तोड़ा। आगे गौरी, नादिरशाह, अब्दाली तक ने इस देश के नक्शे को नहीं बदला। तुर्क आये, अफगान आये किंतु उन्होने विभाजन नहीं किया। यहाँ तक कि मुगलिया सल्तनत ने हमेशा इस देश की अखंड़ता को पहचाना और मंजूर किया। उन्होंने इस देश में अपने किसी देश की तामीर नहीं की। औरंगजेब चाहता तो अपनी सल्तनत से गैर मुस्लिमों को अपनी ताकत और तलवार से खारिज करके एक इस्लामी देश बना सकता था, लेकिन वह भी ता-जिंदगी इसी एक हिंदोस्तान के लिए लड़ता जीतता हारता रहा।

इन सभी ऐतिहासिक घटनाओं को देखते हुए निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि 5000 साल से इस महादेश की एकता और अखंडता चली आ रही थी क्योंकि यहाँ राज्य करने आनेवाला राजा अपनी संस्कृति को भूलकर इस हिंदुस्तान की संस्कृति को अपना लेता था। किंतु सवाल यह पैदा होता है कि ऐसा क्यों हुआ कि अंग्रेजों की सौदागर कौम के हाथों पाँच हजार साल पुराना ये। यह महादेश अपने इतिहास में पहली बार विभाजन का शिकार हुआ।

सन्1857 के क्रांति के बाद ब्रिटिशोंने मुसलमानों के प्रति जो घृणा एंव संदेह भाव था उसे मिटा दिया। सर सैय्यद अहमद खाँ शुरू से ही काँग्रेस का विरोध करते थे उन्होने मुसलमानों को काँग्रेस से अलग रहने के लिए कहा था। मुस्लिमों के लिए उन्होने सन् 1920 में मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। लॉर्ड कर्जन ने सन् 1905 में बँगाल विभाजन किया। मुहम्मद अली जिन्ना को अंग्रेजों ने अपने हाथ की कठपुतली बना दिया था। जिन्ना ने दो पृथक -पृथक राष्ट्रों का सिद्धांत रखा। दोनों धर्मो के बीच के आचार-विचार, खान-पान, इतिहास परम्पराएँ अलग दिखाकर शांति स्थापित करने के लिए अलग पाकिस्तान की माँग की। जिन्ना के सांप्रदायिक विचारों को मुस्लिम जनता तथा ब्रिटिश सत्ता ने प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप 30 दिसम्बर, 1906 में नवाब सलीम उल्ला खाँ ने भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना की।

जिन्ना की तरह अल्लमा इकबाल ने भी हिंदुस्तान का विभाजन करके इस्लामी राज्य के रूप में पाकिस्तान की कल्पना पेश की। डॉ. इकबाल स्वयं कश्मीरी ब्राह्मण वंश के थे। उन्होंने लिखा था -

"सारे ज़हाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा

हम बुलबुले है इसकी ये गुलिस्तां हमारा।"

लेकिन खिलाफत आंदोलन के बाद वे कट्टर इस्लामी सिंद्धांतवादी बन गए फिर उन्होने अपना राष्ट्रगीत बदल डाला -

"चीनो - अरब हमारा हिंदोस्ता हमारा

मुस्लिम है हम वतन है, सारा जहाँ हमारा।"

इकबाल के सांप्रदायिक विचारों के कारण हिंदू-मुस्लिमों में सांप्रदायिक तनाव निर्माण हुए जिसके फलस्वरूप मुसलमानों ने पाकिस्तान की माँग का पूर्ण समर्थन किया। इसीकारण अल्लामा इकबाल को पाकिस्तान के जनक माना जाता है। ब्राह्मण वंशज होने के बावजूद इकबाल इस्लामी सिंध्दातवादी बने क्योंकि इसके पिछे उनका नीजि स्वार्थ और हिंदुओं के प्रति द्वेष छिपा था। सन् 1912 मे इकबाल की कविताओं से प्रसन्न होकर स्वीडिश अकादेमी ने 'नोबल पुरस्कार' के लिए इकबाल की चुनी हुई कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद माँगा था। स्वीडिश अकादेमी के सदस्य ऐन्ड्रूज गांधीजी के परम भक्त थे। ऐन्ड्रूज जानते थे कि गांधीजी रविंद्रनाथ टैगोर को 'गुरूदेव' कहते थे। इसीलिए उन्होंने व्यक्तिगत पत्र लिखकर टैगोर जी से उनकी गीतों का अंग्रेजी अनुवाद मँगाया। जिसे गीतांजली कहा जाता है। इकबाल जिन्ना के साथ लीग के लिए समय व्यतीत करते रहे। ऐन्ड्रूज के शिफारसों के आधार पर सन् 1913 का स्वीडिश अकादेमी का नोबेल पुरस्कार रविंद्रनाथ टैगोर को दिया गया इसी कारण इकबाल का दिल टूट गया, उत्तेजित होकर उन्होंने अपना राष्ट्रगीत बदल डाला। सन् 1930 के मुस्लिम लीग के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने पाकिस्तान की कल्पना पेश की।

जब सन् 1927 सायमन कमीशन भारत आया तो काँग्रेस ने इसके विरोध में हड़ताले, जुलस प्रदर्शन किये क्योंकि सायमन कमीशन के सारे सदस्य अंगेज थे। इस वक्त मुस्लिम लीग ने काँग्रेस का साथ नहीं दिया। आगे सन् 1937 के चुनावों में काँग्रेस को अच्छी सफलता मिली। तब मुस्लिम लीग ने हिंदू राज्य में मुसलमानों पर अत्याचार हो रहा है, इस्लाम खतरे में है, इस प्रकार का प्रचार किया। मुस्लिमों का शुभचिंतक अंग्रेजों ने बाबरी मस्जिद और रामजन्मभूमि मंदिर के झगड़े को जिदां किया। ब्रिटिशों ने हिंदू-मुस्लिमों को एक-दूसरे के खिलाफ भड़काने का प्रयास किया। सन् 1939 के दूसरे विश्वयुद्ध में भारत को शामिल कर लेने के विरोध में काँग्रेस मंत्री मंडल ने त्याग-पत्र दे दिया। सन् 1940 के लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान का प्रस्ताव पारित किया गया। आगे 2 जून, 1946 इ. को केबीनेट मिशन को अस्वीकार करके जिन्ना ने पाकिस्तान की माँग की। अपनी माँग मनवाने के लिए सीधी कार्यवाही की धमकी दी। परिणाम स्वरूप सारे देश में सांप्रदायिक दंगों का भूचाल आया। हिंदू-मुसलमान कट्टर शत्रू बनकर एक -दूसरे को नष्ट करने पर उतारू हो गये जिसका सीधा लाभ अंग्रेजों की कूटनीति को मिला और पाकिस्तान की माँग का समर्थन इंग्लैंड भी करने लगा। लॉर्ड माउंटबेटन ने 14 अगस्त 1947 को 'पाकिस्तान संघ' का निर्माण किया और 15 अगस्त 1947 भारत अधिराज्य की स्थापना हो गई।

विभाजन के बाद बहुत बड़ी सांप्रदायिक हिंसा हो गयी। कुछ थोड़े हिंदू-मुसलमान दूसरे क्षेत्रों में गए। यहाँ के वर्ग खासकर नौकरी पेशा और उद्‌योगों से जुड़ा वर्ग पाकिस्तान जा सका। वहाँ भी मुसलमानों का हालात कुछ अच्छा नहीं है। भारत से जाने वाले मुसलमानों को वहाँ नफरत की दृष्टि से देखा जाने लगा। ये भ्रम था कि एक धर्म के लोग एक देश में चैन से रह सकते है, तुंरत गलत साबित हुआ।

वास्तव में भारत को आझादी देने की तारीख ब्रिटिश सत्ता के हाऊस ऑफ कॉमर्स ने जुन 1948 तय की थी। लेकिन बॅ. जिन्ना की बीमारी की वजह से 15 अगस्त, 1947 निश्चित की। कहना यह होगा कि शासक की छोटी-सी भूल भी भावी इतिहास को प्रदूषित कर सकती है और उसके कारण हिंसा का ऐसा दौर शुरू हो जाता है, जो कई पीढ़ीयों तक थमने का नाम ही नहीं लेता। जैसा कि सन् 1947 में अगर वायसराय

लॉर्ड माऊंटबेटन भारत के विभाजन का अनुमोदन न करता तो न तो पाकिस्तान बनता और न बांगलादेश। और नहीं भारत विभाजन के बाद की हिंसा या पाकिस्तान द्वारा थोपे गए युद्धों के कारण हुआ हिंसा को झेलना पड़ता। इसी क्रम में कारगिल में की गयी अवांछित घुसपैठ के कारण हुई हिंसा या भावी युद्धों में होनेवाली रक्तपात की आशंका से भी मुक्त नहीं हुआ जा सका और न भविष्य में हुआ जा सकेगा।

सन् 1947 में पाकिस्तान दुनिया के नक्शे में आ गया। फिर सांप्रदायिक दंगे हुए। हिंदू -मुस्लिम एक दूसरे के खून के प्यासे बने थे। ऐसा लगता था कि टुकडे धरती के नहीं, उन तमाम मासूम लोगों के हुए जिनके शव पुरे भारत की धरती पर बिखर गये थे। और यह दुनिया का सबसे बड़ा कब्रिस्तान बन गया है।

दुनिया की आज की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कमलेश्वर ने कहा है कि सन् 1947 में पाकिस्तान अस्तित्व में आ गया। लेकिन आज बनते हुए 'पाकिस्तान' को रोकना चाहिए। दिलो दिमाग पलित अलगाववादी भावना को मिटाना चाहिए। क्योंकि इन बनते हुए 'पाकिसतानों' की वजह दुनिया में तबाही मच गयी है जैसा कि सऊदी अरब, सूजन, अफगाणिस्तान, पाकिस्तान के आतंकवादी जेहाद के नाम पर मासूम नागरिकों को मारते लुटते रहे हैं। बोस्नियाँपर सर्वो ने हमला किया। इराक पर अमरीकी बम-बारी जारी है आदि।

अदीब की अदालत में अलग-अलग किरदारों में हजारो बरस बूढ़े इतिहास को पेश कर अपने वक्त की संकटापन्न स्थितियों से दो -चार होने और भविष्य के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण 'क्लू' 'जुटाने' के समूचे उपक्रम को नया शिल्पगत प्रयोग कहकर निहायत सत ही ढंग से लिया जा सकता है। लेकिन असल में क्या यह सारा रूपक इसीलिए नहीं बांधा गया कि साम्राज्यवादी ताकतों द्वारा रचे और महिमामंडित किए गए इतिहास को आज अदीब की संवेदनात्मक, संदेहात्मक, विश्लेषणात्मक और सृंजनात्मक दृष्टिसे देखे जाने की जरूरत आ खड़ी हुई है। अपनी हीनता - बोध से उभरने, जड़ों से जुड़ने अपनी अस्मिता को तलाशने और अपनी पराजयों को खंगालने के आत्मविश्लेषणात्मक दौर में उस सारे इतिहास का पुनर्लेखन आवश्यक हो गया है। जो

साजिशों, उन्मादो, प्रतिशाधों, हवासों और वहशी जूनुनों के चलते इन्सानियत और तहजीब दोनों का अंग-अंग करता आया है। जो विजेता और पराजितों को दो दुनियाओं में बाँट कर विजेताओं के सच को अंतिम सच का दर्जा देता है। इसीलिए ही 'कितने पाकिस्तान' ऐतिहासिक उपन्यास नहीं, बल्कि 'इतिहास-अध्ययन' का उपन्यास है। तथ्यों पर आधारित हुए भी इतिहास तथ्यों सा स्थिर ठोस और निर्विकार नहीं होता। लेखक उपन्यास में सुविधानुसार चीरते हुए इनकी व्याप्ति अतीत और भविष्य तीनों कालों में एक साथ देखी जा सकती है। वक्त की तरह मनुष्य भी अखंड़ और अनश्वर है। इसीलिए ये सारे सरोकार समाज, राजनीति, भूगोल सभ्यता जैसे स्थूल श्रेणीबद्ध वर्गो को नकारते हुए मानवीय सरोकरों में बदल जाते हैं।

इस उपन्यास में कमलेश्वर ने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण किया है।

'सामाजिक समस्या' के अंतर्गत कमलेश्वर ने व्यसनाधिनता, नारी शोषण, अनमेल विवाह, संयुक्त परिवार, परित्यक्त्या नारी, अतंर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, बलात्कातारी नारी, मकान आदि समस्याओं का चित्रण किया है। व्यसनाधिनता व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए हानिकारक सिद्ध हो रही है। व्यसनाधिनता का उदाहरण देते हुए कहा है कि यह प्राचीन काल की एक बड़ी सभ्यता अफीम की अर्ध बेहोशी में डूबी थी। अर्थात नशीली दवाऐं अथवा शराब व्यक्ति विशेष के लिए हानीकारक तो हैं ही साथ में राष्ट्र के लिए भी हानीकारक है।

युद्धों, महायुद्धों और विभाजन के दौरान नारियों का शोषण बहुत मात्रा में हुआ। आर्यो के कालखंड़ से ही नारी को पुरूषों दास माना गया। उसे क्षुद्र श्रेणी में गिनाया गया। इसी पुरूष- प्रधान संस्कृति के कारण 'भोग-वस्तु' बनी नारी को युद्धों के दौरान सामुहिक बलात्कार का शिकार बनना पड़ा जैसे किम-हकसुन बनी थी। नारी की सुंदरता ने उसे (आहिल्या) परित्यक्ता जीवन बीताने के लिए मजबूर किया है। समाज में बालविवाह की प्रथा पहले रूढ़ थी, साथ ही साथ अनमेल विवाह, बहुविवाह प्रथा भी चल रही थी। समाज में विधवा औरतों की स्थिति दयैनीय थी। धर्मांध लोग ऐसी नारियों को

अपने हवस का शिकार बनाने के लिए उसे धर्म का वास्ता देते थे। जैसे विधवा नारी चाहकर भी किसी दूसरे आदमी सें रिश्ता नहीं रख सकती, यदि रखती है तो उसे काफी तकलीफों का सामना करना पड़ता है।

'राजनीतिक समस्या' के अंतर्गत कमलेश्वर ने आंतकवाद, स्वार्थवृत्ति, अलगाववाद, गलत नेतृत्त्व, भ्रामक प्रचार, विभाजन, शरणार्थी, रियासते, गृहयुद्ध , उत्तराधिकार आदि समस्याओं का चित्रण किया है।

स्वार्थि वृत्ति से प्रेरित नेताओं ने भ्रामक प्रचार के सहारे लोगों के दिलों दिमाग में अलगाववादी भावना को बिठाकर सन् 1947 में भारत-पाकिस्तान विभाजन किया। विभाजन के बाद सांप्रदायिक दंगे भड़के। अपने ही देश ने हिंदू-मुस्लिम शरणार्थी बने हुए थे। स्वाधिनता के समय पाँच सौ पैसंठ रियासते थी जो भारत या पाकिस्तान में शामिल होने के लिए स्वंतत्र थी। कश्मीर हैदराबाद, भोपाळ आदि ने आरंभ में कठिनाइयाँ पैदा की। अंत में वे भारत में सामिल हो गए।

अलगाववादी भावना के कारण दुनिया में हजारो पाकिस्तान बन गए और उन पाकिस्तान बन रहे हैं। मगर अब उस बँटवारे को रोकना चाहिए। कमलेश्वर के शब्दों में - "जितना जो कुछ टूट गया, उसे भूल जाओ। जो कुछ टूटने के बाद बना है, उसे टूटने से बचाओ। जितने मुल्क बनेंगे वे सिर्फ इंसान को तक्सीम करेंगे। जरूरत से ज्यादा इस दुनिया का बँटवारा हो चुका है . . खुदा के लिए बँटवारे की इस जहनियत को खत्म करो।" विभाजन खत्म होगा तो अपने आप आतंकवाद का नामेनिशान मिट जायेगा। आतंकवाद के खत्म होते ही विश्व में शांति, बंधुता आदि महान तत्वों का प्रचार और प्रसार होगा।

'आर्थिक समस्या' के अंतर्गत ब्रिटिशपूर्व भारत, ब्रिटिशों की व्यापार नीति, धन की अतिरिक्त लालसा, गुलामों का व्यापार, जमीन की पैदावारता, गरीबी, आर्थिक विषमता आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है। ब्रिटिशपूर्व भारत आर्थिक दृष्टि से समृद्ध था। लेकिन जैसे ही ब्रिटिश यहाँ आये और उन्होंने अपनी आर्थिक नीति यहाँ अपनाई धीरे धीरे यहाँ के उद्योग नष्ट होने लगे। ब्रिटिशों के लिए भारत कच्चा माल

देनेवाला और पक्का माल खरीदने वाला देश बन गया। धन की अतिरिक्त लालसा के कारण ब्रिटिश नीग्रो लोगों को गुलामों के रूप में बेचते थे। यह कहा जा सकता है कि अंग्रेज यहाँ केवल शोषण का दुश्चक्र फैलाने आये थे, अंग्रेजों के साथ महाजन, सामंत समाज के मालिक बन बैठे थे। इसीकारण चारो ओर गरीबीं का बोलबाला था। विभाजन में अधिक उपजाऊ और सिंचित भाग तथा औद्योगिक और कच्चे माल के उत्पादक प्रदेश पाकिस्तान को मिले थे। जिससे आर्थिक दशा और कमजोर हो गयी।

'धार्मिक समस्या' के अंतर्गत कमलेश्वर ने जाति तथा वर्गभेद ब्राह्मणवाद ईसाई धर्मप्रचार, धार्मिक कठोरता, धर्मांतरण तथा परंपरा आदि समस्याओंपर प्रकाश डाला है।

आर्यों के आगमन के साथ ही हिंदुस्तान में धार्मिक समस्याओं की शुरूआत हुई। अर्यो ने समाज को चार वर्गो में बाँट दिया। चारों वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ रहें क्योंकि उन्होंने अपने आपको ब्रह्मा के मुख से पैदा होने के सिद्धांत को मान लिया था। वेद पढ़ना यज्ञ करना आदि महत्त्वपूर्ण कार्य वे करते थे। यदि क्षुद्र ऐसा कार्य करेगा तो वह दंड के लिए पात्र था। क्षुद्र वंशी ऋषी शंबुक ने मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना की, इसीकारण ब्राह्मण पुत्र मर गया तब धर्म रक्षा के लिए क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए राम ने शंबुक की गर्दन धड़ से अलग कर दी। इसीतरह धर्म के नाम पर अधर्म हुए। महाभारत के युद्ध में भी अधर्म का ही सहारा लिया गया।

धर्म-अधर्म की बाते सिर्फ हिंदू संस्कृति में ही नहीं चलती बल्कि हर संस्कृति में इसका बोलबाला है। सभ्यता का उदाहरण देते हुए कमलेश्वर ने कहा है कि अजटेक सभ्यता के लोग देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पशुबलि देते थे। देवताओं के नाम पर पशुबलि देना धर्म नहीं अधर्म है। देवताओं को चढ़ाया हुआ भोग पुजारियों के पेट में जा रहा था। लोगों की तरह देवताओं की भी मजहब में कैद किया था। विभाजन के पूर्व मुस्लिमों का खुदा था, पर विभाजन के बाद इकबाल ने उसे मजहब मे कैद करके सिर्फ मुसलमानों का बना दिया। इन नेताओं की धार्मिक कठोरता, के कारण लोगों के दिलों में अलगाववादी भावना प्रचुर मात्रा में उद्भव हुआ। अपने धर्म को श्रेष्ठ बनाने के लिए वे

भरसक प्रयास करने लगे। जैसा कि सत्रहवी सदी में औरंगजेब ने किया था । औरंगजेब ने इस्लाम की श्रेष्ठता सिद्‌ध करने तथा हिंदुओं को कुचलने के लिए सारी शक्ति लगा दी। उसने धार्मिक सेंसर लगाया। धर्मातंरण को बढ़ावा दिया। स्वेच्छा से नहीं तो तलवार के बलपर धर्मातंरण के लिए सत्रहवी सदी याद की जाती है।

'साहित्यिक समस्या' के अंतर्गत कमलेश्वर ने राजाश्रित इतिहासकारों पर प्रकाश डाला है। जो अपने स्वार्थ की खातिर सच्चाई का गला घोटकर झूठ का दामन पकडते थे। ऐसे इतिहासकार जो लिखने के लिए स्वतंत्र नहीं थे। उनका लिखा हुआ इतिहास बादशाह की मर्जी, गौरवगान, और संदिग्ध विरत्व आदि घटनाओं पर प्रकाश डालाता है। औरंगजेब को निर्दोष साबित करने के लिए इन इतिहासकारों ने मनगढ़ंत कहानियाँ बनायी।

अंग्रेजी इतिहासकारों ने अपने स्वार्थ के लिए और साम्राज्यवाद के खातिर हिंदुस्तान में हिंदू-मुस्लिमों में अलगाववाद का बीज बोया। कनिंघम, नेविल आदि इतिहासकारों ने बाबरी मस्जिद और राम जन्मभूमि मंदीर आदि झगड़ों को उठाया। अपने इतिहासों में उन्होने बाबर दुवारा राममंदिर तोड़ने का जिक्र किया। साथ-साथ हिंदुओं के खून से बाबरी मस्जिद के लिए गारा बनवाया गया आदि घटनाएँ दर्ज की, जो कि पूर्णत: गलत थी। ये घटनाएँ ब्रिटिशों की कूटनीति पर प्रकाश डालती है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में कमलेश्वर ने राजाश्रित इतिहासकारों का पर्दाफाश किया है। साहित्यिक कर्म को नजरअंदाज करके ये इतिहासकार धातु और चंद सिक्को के पीछे हुए थे। इस तरह लिखा हुआ सीहित्य समाज का पथप्रदर्शन करने के बजाय उसे आपसी मतभेदों में उलझाकर अंधेरी गर्त में ले जा सकता है।

'वैज्ञानिक समस्या' के अंतर्गत कमलेश्वर ने अणुयुग की शुरूआत और नतीजे को पाठकों के सामने रखा है। कमलेश्वर ने विज्ञान के शापित रूप को चित्रित किया है।

रूदर फोर्ड ने पदार्थ के गर्भ में स्थित अणु और उसका केंद्रक न्युक्लियस का संशोधन किया था। अणु में स्थित शक्ति को रूदर फोर्ड ने जाना था। इसीलिए वह

इस अविष्कार को गुप्त रखना चाहता था। क्योंकि यह राज किसी साम्राज्यवादी धर्मांध लोगों के हाथ में पड़ जाए तो इसका प्रयोग वे मानव विनाश के लिए ही करेंगे और हुआ भी ऐसा ही। 16 जुलाई, 1945 को अलमागोर्दो के रेगिस्तान में अणुबम का पहला सफल परीक्षण हुआ।

दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान इसी अणुबम का प्रयोग मानव विनाश के लिए किया गया। युद्ध का जूनुन कुछ भी करवा सकता है इसीलिए अमरिका ने हिरोशिमा और नागासाकी की घनी बस्ती पर अणुबम का प्रयोग किया। जिसके परिणाम आजतक वे भुगत रहे हैं। हिरोशिमा और नागासाकी क्षार-क्षार हो गयी, बाल बच्चे अपाहिज , लुले, लंगड़े अंधे हो गए।

आज के दौर में भारत और पाकिस्तान ये दोनों देश एक/दूसरे को शत्रू के रूप में देखते हैं। दोनो देशों ने तीन-तीन सफल अणुपरीक्षण लिये हैं। जिसके कारण विषैली हवा बह रही है। कमलेश्वर के शब्दों में -

"इन बंद कमरों में मेरी साँस घुटी जाती है
खिड़कियाँ खोलता हूँ तो जहरीली हवा आती है ।"

अंत में कमलेश्वर को इतना ही कहना है कि अगर इसी तरह से अणुपरिक्षण होते रहेंगे तो जल्दी ही तीसरा विश्वयुद्ध अवश्य होगा। इसीलिए वे ऐसे परीक्षणों के खिलाफ है। आंतत: वे मानवतावाद, शांति और भाईचारे का जीवनयापन करने के पक्ष में हैं।

# ❋ संदर्भ ग्रंथ सूची ❋

# संदर्भ ग्रंथ सूची


| अ.क्र. | लेखक | किताब का नाम | प्रकाशन एवं संस्करण |
|---|---|---|---|
| 1. | कमलेश्वर , | कितने पाकिस्तान | राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली-6 दृवितीय संस्करण, 2000 |
| 2. | कमलेश्वर, | मेरे साक्षात्कार | राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली-6 |
| 3. | पांडे,(डॉ.) अम्बा दत्त | भारतीय स्वाधीनता आंदोलन | आधुनिक प्रकाशन, मौजपुर, दिल्ली प्रथम संस्कर, 1995 |
| 4. | मंजुल, रसिक बिहारी | भारत में इस्लाम | वी.के.पब्लिशिंग हाउस, बरेली (उ.प्र.) प्रथम संस्करण, 1994 |
| 5. | मिश्र, सत्यदेव | पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धांत और वाद | विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा प्रथम संस्करण, 1975 |
| 6. | गुप्त, (डॉ.)शांति स्वरूप | पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत | अशोक प्रकाशन, दिल्ली नवीन, 1994 |
| 7. | पिंगले, (डॉ.)भीमराव | मानव समस्या : समाधान | समता प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण, 1995 |
| 8. | नागोरी, (डॉ.)एस.एल. | आधुनिक भारत का सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक इतिहास | बोहरा प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण, 1996 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 9. | सिंह,(डॉ.) शिव भानु | धर्म-दर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन | शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण,1997 |
| 10. | शर्मा,(डॉ.) कालूराम, व्यास,(डॉ.) राजशेखर | भारतीय इतिहास की मूल-धाराएँ | राजस्थान प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण, 1994 |
| 11. | सिंह, जी.आर. | विश्व के प्रमुख धर्म | हिंदी थियोलॉजिकल लिटरेचर कमेटी, जबलपुर प्रथम संस्करण, |
| 12. | लवानिया,(डॉ.) एम.एम., जैन, शशी के. | भारत में सामाजिक समस्याएँ | रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर प्रथम संस्करण, 1996 |
| 13. | भास्कर, (डॉ.)विमल | हिंदी में समस्या साहित्य | जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, |
| 14. | बिस्सा,(डॉ.) कृष्णकुमार | चंद्रां(साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना) | दिनमान प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 1945 |
| 15. | सूरी, (डॉ.)योगेश | यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्या | चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर 1941 |
| 16. | रणसुभे, (डॉ.)सूर्यनारायण | कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रवृत्ति | पंचशील प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण, 1977 |
| 17. | (सं.)सिंह मधुकर | कमलेश्वर | शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1977 |
| 18. | मिश्र, भगीरथ | काव्यशास्त्र | विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी चतुर्थ संस्करण, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 19. | शर्मा,(डॉ.) शिवकुमार | हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ | अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली सत्रहँवा संस्करण, 2001 |
| 20. | त्रिगुणायत, (डॉ.)गोविंद | शास्त्रीय समीक्षा सिध्दांत | गौरी शंकर वर्मा भारती साहित्य मंदिर फव्वारा, दिल्ली, |
| 21. | शुक्ल,(डॉ.) सोमनाथ | स्मृति शास्त्र-समाज संस्कृति और राजनीति | आशीष प्रकाशन, इलाहाबाद 1996 प्रथम संस्करण |
| 22. | जगन्नाथ प्रसाद मिश्र | भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास | प्रतिमान प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1988 |
| 23. | अखिलेश जायसवाल | मध्यकालीन भारत का इतिहास | प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1992 |
| 24. | भार्गव, (डॉ.) वी.एस. | आधुनिक भारतीय इतिहास | रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर,1996 |
| 25. | कोठारी, मिलाप | अब भारत को उठाना होगा | राजस्थान पत्रिका लि., जयपुर,1993 |
| 26. | गुप्त, गणपतिचंद्र | भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-सिध्दांत | लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1997 |
| 27. | पांडये, धनपति | आधुनिक भारत का इतिहास | मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994 |

# शब्दकोश


| अ.क्र. | लेखक | किताब का नाम | प्रकाशन एवं संस्करण |
|---|---|---|---|
| 1. | (सं.)चातक गोविंद | आधुनिक शब्दकोश | तक्षशीला प्रकाशन, दिल्ली<br>प्रथम संस्कारण, 1986 |
| 2. | (सं.)बसु, नगेंद्रनाथ | हिंदी विश्वकोश | हिंदी विश्वकोश, दिल्ली<br>1986 |
| 3. | (सं.)नवलजी | नालंदा विशाल शब्दसागर | आदीश बुक डेपो, दिल्ली<br>प्रथम संस्करण, 1988 |
| 4. | (सं.)डा.बाहरी, हरदेव | हिंदी विश्वकोश | राजपाल प्रकाशन, दिल्ली<br>प्रथम संस्करण, 1995 |
| 5. | दपर्ण महेश | स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी कोश | सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली<br>प्रथम संस्करण, 1988 |
| 6. | (सं.)वर्मा धीरेंद्र | हिंदी साहित्य कोश | ज्ञानमंडल लिमिटेड प्रकाशन, वाराणसी<br>द्वितीय संवत, 2020 |
| 7. | (सं.)वर्मा रामचंद्र | मानक हिंदी कोश | हिंदी साहित्य संम्मेलन, प्रयाग,<br>प्रथम संस्करण 1965 |
| 8. | (सं.)रामचंद्र वर्मा | संक्षिप्त हिंदी सागर | नागरी प्रचारीणी सभा, काशी<br>प्रथम संस्करण, 1986 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 9. | सं.दास श्यामसुंदर | हिंदी शब्द सागर | नागरी प्रचारीणी सभा, काशी संवत 2021 |
| 10. | आपटे वामन शिवराम | संस्कृत-हिंदी कोश | मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली 1969 |
| 11. | (सं.)राधाकांतदेव राजा | शब्दकल्पद्रुम | चौखंबा संस्कृत सीरीज आफीस, वाराणसी तृतिय संस्करण, 1969 |

## पत्र-पत्रिकाएँ

| अ.क्र. | लेखक | किताब का नाम | प्रकाशन एवं संस्करण |
|---|---|---|---|
| 1. | (सं.)मिश्र गोविंद | अक्षरा | हिंदी भवन,भोपाल, अक्टूबर,2000 |
| 2. | मिश्र ,विद्यानिवास | साहित्य अमृत | नई दिल्ली अगस्त, 2001 |
| 3. | (सं.)अर्चना वर्मा | हंस | अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, जनवरी/फरवरी,2000 |
| 4. | (सं.)अग्येय | साक्षात्कार | मध्यप्रदेश भोपाल साहित्य परिषद, अक्टूबर,2000 |
| 5. | (सं.)मिश्र विनोद कुमार | अणुव्रत | अणुव्रत महासमिती 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली,2 |


*****